

| S  | M  | T  | W  | T  | F  | S  |
|----|----|----|----|----|----|----|
| 1  | 2  | 3  | 4  | 5  | 6  | 7  |
| 8  | 9  | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 |    |    |    |    |

Short Questions

Date - 08/05/2023

Boalia, Monday.

(i) योगकुर्यान्: कथं:

वायवदतामाश्रमपदं नीतवान्?

उत्तरम् → योगकुर्यान्: वायवदताम् आश्रमिकाश्रम-  
-धार्मिकीकरणेन तथा श्रवणिकीकरणेन आश्रमपदं  
नीतवान्। वायवदता आश्रितदेवका इति  
योगकुर्यान् कथितम्। उदयन्या रुद्राक्ष्या उदयन्या  
एषा पार्थिवकन्या कृता योगकुर्यान्।

(ii) अस्यां मे मही श्रुता - इति कस्या कां

श्रुतिः उक्तिः?

उ: → अस्यां मे मही श्रुता - इति

वाक्यः उदयन्या मन्त्रिः योगकुर्यान्।

उक्तिः मगधराजपुत्रीः पद्मावतीः श्रुतिः।

(iii) ब्रह्मचारी कम्पान्नग्राह्यः कथं अत्रागतः?

उ: ब्रह्मचारी राजगृहग्राह्यः अत्रागतः। राजगृहे

नारिकेलप्रामं वेदविद्याभ्यासं अत्रागतवान्।

किन्तु तत्र अग्निदाहेन वाक्यः उदयन्या

पत्नी वायवदता मन्त्री च योगकुर्यान्।

मृते। ततः राजा नारिकेलप्रामं तुकवान्।

ततः अत्रागतः अरुमनीयः जातः। अतः

ब्रह्मचारी राजगृहात् निर्गतः।

(iv) वायवदता केन नाम्ना हृदयपरिच्छेदे कस्या  
प्रकाशे न्यासकरणेन उपनयता?

उ: → वायवदता आश्रितिकानाम्ना हृदयपरिच्छेदे  
मगधराजदशकस्या दशिन्याः पद्मावतीः प्रकाशे



ন্যায়কালেন উপায়স্তা যোগকৃতান্নন ।

(v) কাঙ্ক্ষকীয় কঃ?

উঃ → কাঙ্ক্ষকীয়ঃ আসীঃ মগধরাজদর্শকস্য  
অনুঃ পুরচরী বৃদ্ধঃ ব্রাহ্মনঃ । কাঙ্ক্ষকীয়-  
চরিত্রস্য লক্ষণং যথা -

"যে নিতঃ সত্যসম্ভ্রমঃ কামদোষবিরজিতঃ ।

জ্ঞানবিজ্ঞানকুশলাঃ কাঙ্ক্ষকীয়াস্তু হত মতাঃ ॥" ইতি ।

(vi) দুষ্কৃত্য জন্ম কস্মিন বংশে অহুঃ? কস্য  
নগরস্য রাজা সঃ?

উঃ → দুষ্কৃত্য জন্ম পুরুবংশে অহুঃ । সঃ  
আসীঃ ইন্দিরাশ্বরজ - নগরস্য রাজা ।

(viii) 'মৌরীকিনাঙ্কঃ' - ইত্যস্য পদস্য অর্থঃ  
সমাধানম্ 'লোপ্যম্' ।

উঃ → মৌর্যাঃ কিনঃ (জ্যোতিষচক্রঃ) ইতি মৌরীকিনঃ  
ইতি স্বর্গীভূতপুরুষস্য নামঃ । মৌরীকিনঃ এব  
অঙ্কঃ (ছন্দঃ) যস্য সঃ ইতি বহুব্রীহিঃ ।  
(সকুতলা - 1/13)

(vii) 'অপ্সিন্ ক্রনে বিদ্যুতঃ শলু ময়া -  
ইতি কস্য কথমেবাদৃশী উক্তিঃ?

উঃ → 'অপ্সিন্ ক্রনে বিদ্যুতঃ শলু ময়া' - ইতি  
'অভিজ্ঞানশকুন্তলম্' ইতি নাটকস্য উক্তবাক্যস্য  
উক্তিঃ নটীঃ অতি ।

Important



| S  | M  | T  | W  | T  | F  | S  |
|----|----|----|----|----|----|----|
| 1  | 2  | 3  | 4  | 5  | 6  | 7  |
| 8  | 9  | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 |    |    |    |    |

গীতং জীবিতী। তন্মধুরগীতং শুদ্ধা  
সুতধারঃ নটকোপাঙ্গুশিরকপঃ কার্যমেব  
বিপ্লুতবার্। মতঃ রত্নে ক্রমেতৎ।

(ix) কুত্র কুত্র কেন অকারেন শকুন্তলায়াঃ

অঙ্গুরীয়কঃ ভ্রষ্টম্?

উঃ- হস্তিনাপুরে গমনকালে শক্রাবতাবনামকে  
জ্ঞান শরীতীর্ষ্মি অহোদহে দেবতায়ঃ নিমিত্তম  
জলাঙ্গুলিঅদানকালে শকুন্তলায়াঃ অঙ্গুলিতঃ  
ইম্যুত্তমামাঙ্কিতম্ অঙ্গুরীয়কঃ জলে

নাতিতম্।

(x) মারীচঃ কঃ?

উঃ- মারীচঃ অসীৎ-স্বামুদ্রমরীচঃ জাতঃ  
অজ্ঞানতিঃ। ভয়ানকঃ নম কুশ্যপঃ।  
অঃ- অসীৎ দেবদানবানঃ। অহো। অসু  
অঃ- দক্ষয় কন্যাঃ। শরীতীর্ষ্মি। ভয়ানক  
রাজা ইম্যুত্তমঃ শকুন্তলা অহ ভয়ানক  
চ অহ মিলিতঃ অহঃ। ইম্যুত্তমঃ  
আলীর্ষদঃ চ দত্তবার্।

(xi) কন্যা অশ্রমঃ কুত্র অসীৎ?

উঃ- মালিনী নদীতীরে কন্যা অশ্রমঃ অসীৎ।

Important

(xii) দেবতাক্যঃ তারঃ কিম্?

Ans:- নটকোপাঙ্গুশিরকপঃ সুতধারঃ  
ইদা দেবতাক্যঃ শরীতীর্ষ্মি



| JUNE |    |    |    | 2016 |    |    |  |
|------|----|----|----|------|----|----|--|
| S    | M  | T  | W  | T    | F  | S  |  |
|      |    |    | 1  | 2    | 3  | 4  |  |
| 5    | 6  | 7  | 8  | 9    | 10 | 11 |  |
| 12   | 13 | 14 | 15 | 16   | 17 | 18 |  |
| 19   | 20 | 21 | 22 | 23   | 24 | 25 |  |
| 26   | 27 | 28 | 29 | 30   |    |    |  |

ହେତୁବାକ୍ୟମ୍ । ଏତଦ୍ ବାକ୍ୟମ୍ । ସମ୍ବଳକାମସାର୍ଥଃ  
ନାଟକେ ଉଚ୍ଚାରିତେ । ଅତିଜ୍ଞାନଶକ୍ତୁଳେ  
ହେତୁବାକ୍ୟଃ ସଂସା -  
"ଅବର୍ତ୍ତତାଃ ଶକ୍ତିବିତ୍ତୟା ପାରିବିଃ  
ସ୍ବପ୍ନାଦି ଶକ୍ତିମହତାଃ ମହୀୟତାମ୍ ।  
ସମାଳି ଚ ଶକ୍ତିମହତୁ ନୀଳଲୋହିତଃ  
ସୁମର୍ତ୍ତବଃ ପାରିଗତଶକ୍ତିବାଦୀ ହୁଃ ॥" ଇତି ।  
ଅତିଜ୍ଞାନେ - (୭/୩୫)

(xiii) ପାତିଗ୍ରହଣମକାଳେ ଶକ୍ତିତୁଳ୍ୟେ କିଃ  
କିଃ କିଃ ଦତ୍ତମ୍ ?

ଈ. ଶକ୍ତିକ୍ରମାବଦ୍ୟେନ ବିବିଧାଃ ଅଲଂକାରାଃ ଆନୀତାଃ  
କଳ୍ପନା ବୃଦ୍ଧଃ । ଶୁଦ୍ଧଃ ଶୈଳବଦ୍ଧଃ ଦତ୍ତବାମ୍ ।  
ଅନ୍ୟାଃ କଳ୍ପନା ବୃଦ୍ଧଃ ନାଶ୍ଚାବଦ୍ୟଃ  
ଦତ୍ତବାମ୍ । ଅନ୍ୟାଃ ଅନ୍ୟାଃ  
ବୃଦ୍ଧାଃ ମାନିବଦ୍ଧାମ୍ । ଶକ୍ତିମହତାଃ  
ଦେବତାଃ ଆଦେବନାମି ଦତ୍ତବାମ୍ । (ଶକ୍ତିତୁଳ୍ୟା - ୭/୫)

(xiv) ଅତିଜ୍ଞାନଶକ୍ତିତୁଳ୍ୟା ଶକ୍ତିବିଦ୍ୟା ନାମ କିମ୍ ?

ଈ. ଅତିଜ୍ଞାନଶକ୍ତିତୁଳ୍ୟା ଶକ୍ତିବିଦ୍ୟା ନାମ  
ଅବଲମ୍ବିତମ୍ । ଅନ୍ୟାଃ କଳ୍ପନା ସଂସା -

"ଯଦେକେନ ଅମାବେଶାଃ କାର୍ଯ୍ୟମନ୍ତଃ ଅସାଧୁତେ ।

Important ଅମୋଗେ ମନୁ ତଦ୍ଦେବତାଃ ନାମାବଲମ୍ବିତଃ ବୁଦ୍ଧିଃ ॥"

ଅନ୍ୟାଃ କଳ୍ପନା ସଂସା - ଶକ୍ତିବିଦ୍ୟା ନାମାବଲମ୍ବିତଃ ବୁଦ୍ଧିଃ ॥

ତଦ୍ଦେବତାଃ ନାମାବଲମ୍ବିତଃ ବୁଦ୍ଧିଃ ॥



MAY  
28 SATURDAY  
149-216 22nd Week

page - ①

| 2016 MAY |    |    |    |    |    |    |
|----------|----|----|----|----|----|----|
| S        | M  | T  | W  | T  | F  | S  |
| 1        | 2  | 3  | 4  | 5  | 6  | 7  |
| 8        | 9  | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15       | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22       | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29       | 30 | 31 |    |    |    |    |

(xv) ଅତିଜ୍ଞାନମାକୃତୁଲେ ବିଦୃଶକତା ନାମ  
କିମଞ୍ଚି? ଅ ଦୃଶ୍ୟବସ୍ତୁ କିଂ ଅସ୍ପାଦିନପଦଂ  
ଅସୁକ୍ତବାନ୍ ?

ଉତ୍ତରମ → ଅତିଜ୍ଞାନମାକୃତୁଲେ ବିଦୃଶକତା  
ନାମ ମାଧ୍ୟମ୍ୟଃ । ଅତି ।

ଅ ମାଧ୍ୟମ୍ୟଃ ଦୃଶ୍ୟବସ୍ତୁ  
ଅସୁକ୍ତବାନ୍ ।